© AUG 2025 | IRE Journals | Volume 9 Issue 2 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/ire1725553

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन

अंजुम आरा, डॉ. अंजना
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

सारांश (Abstract)- *शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और विकास को गति प्रदान करने वाला एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। यह केवल ज्ञान प्राप्त करने की गतिविधि नहीं, बल्कि एक सतत एवं गतिशील प्रक्रिया है, जो व्यक्ति की बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एवं व्यावहारिक क्षमताओं का समग्र विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास, अनुशासन तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है, जो उनके व्यक्तित्व निर्माण एवं शैक्षणिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से माध्यमिक शिक्षा का स्तर विद्यार्थियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण होता है, जहाँ वे अपनी रुचियों, क्षमताओं, भविष्य की योजनाओं तथा जीवन के लक्ष्यों के प्रति अधिक जागरूक होने लगते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास एवं व्यक्तिगत सफलता के लिए समय प्रबंधन कौशल (Time Management Skills) का विशेष महत्व होता है। समय प्रबंधन कौशल से अभिप्राय उपलब्ध समय का योजनाबद्ध, व्यवस्थित एवं प्रभावी उपयोग करने की क्षमता से है। इसके अंतर्गत दैनिक समय-सारणी का निर्माण, अध्ययन संबंधी कार्यों की प्राथमिकता निर्धारित करना, निर्धारित समय में कार्यों को पूरा करना, अनावश्यक विलंब से बचना तथा शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत गतिविधियों के मध्य संतुलन स्थापित करना सम्मिलित है। प्रभावी समय प्रबंधन कौशल विद्यार्थियों में नियमित अध्ययन की आदत, आत्म-अनुशासन, कार्यकुशलता, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में सहायक हो सकता है। इसके विपरीत समय का अनियोजित उपयोग, अध्ययन कार्यों को टालने की प्रवृत्ति, समय-सारणी का अभाव तथा विभिन्न गतिविधियों के बीच असंतुलन विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार एवं शैक्षणिक प्रगति में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों में विविधता पाई जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी अवसर, पारिवारिक उत्तरदायित्व, विद्यालय की दूरी तथा शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता जैसी परिस्थितियाँ उनके समय प्रबंधन व्यवहार से संबंधित होती हैं। वहीं शहरी क्षेत्रों में विद्यालयी गतिविधियों, अतिरिक्त शिक्षण, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, आवागमन, डिजिटल उपकरणों के उपयोग तथा विभिन्न सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के कारण समय प्रबंधन की अलग प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। तथापि यह आवश्यक नहीं है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल में निश्चित रूप से अंतर हो। इस अंतर की वास्तविक स्थिति का निर्धारण तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से ही किया जाता है। रांची जिला झारखंड राज्य का एक महत्वपूर्ण शैक्षिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार की विद्यालयी परिस्थितियाँ विद्यमान हैं। जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी संसाधन, अध्ययन संबंधी सुविधाएँ तथा दैनिक गतिविधियों में भिन्नता होने के कारण उनके समय प्रबंधन कौशल के स्वरूप में भी विविधता होने की संभावना है। इस संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन उनकी अध्ययन संबंधी आदतों, समय के सदुपयोग, लक्ष्य निर्धारण, कार्यों की प्राथमिकता तथा आत्म-अनुशासन से संबंधित व्यवहारों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के समग्र विकास, जीवन कौशल, आलोचनात्मक चिंतन, स्व-अधिगम तथा उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार के विकास पर विशेष बल दिया गया है। समय प्रबंधन कौशल भी विद्यार्थियों के जीवन कौशल एवं स्व-नियंत्रित अधिगम से संबंधित एक महत्वपूर्ण व्यवहारगत क्षमता है। इस परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन के अंतर्गत विद्यार्थियों की अध्ययन योजना, समय-सारणी का पालन, कार्यों की प्राथमिकता, लक्ष्य निर्धारण, समय के सदुपयोग तथा कार्यों को समय पर पूर्ण करने की प्रवृत्ति जैसे प्रमुख आयामों को ध्यान में रखा जाएगा। इस अध्ययन से प्राप्त परिणाम ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल में समानताओं एवं भिन्नताओं को समझने तथा विद्यालयी स्तर पर प्रभावी समय प्रबंधन संबंधी शैक्षिक रणनीतियाँ विकसित करने में उपयोगी हो सकते हैं।

शब्दावली (Index Terms)- *अध्ययन की नियमितता, आत्म-अनुशासन, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी, माध्यमिक शिक्षा, लक्ष्य निर्धारण, समय का सदुपयोग, समय प्रबंधन कौशल, समय-सारणी*

I. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य झारखंड राज्य के रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। यह अध्ययन इस बात को समझने का प्रयास करता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में समय-सारणी का पालन, अध्ययन संबंधी कार्यों की प्राथमिकता निर्धारित करने, लक्ष्य निर्धारण, समय के सदुपयोग, आत्म-अनुशासन तथा निर्धारित समय में शैक्षणिक कार्यों को पूर्ण करने की क्षमताओं में किस प्रकार की समानताएँ एवं भिन्नताएँ

विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन में विद्यार्थियों की पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी परिस्थितियों के संदर्भ में समय प्रबंधन कौशल से संबंधित व्यवहारों को समझने का प्रयास किया जाएगा। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की समय प्रबंधन संबंधी आवश्यकताओं की पहचान करने तथा प्रभावी अध्ययन आदतों एवं समय के उचित उपयोग को प्रोत्साहित करने में सहायक हो सकते हैं। अध्ययन के परिणाम शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों एवं शैक्षिक योजनाकारों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला मानी जाती है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास, व्यक्तित्व निर्माण, आत्म-अनुशासन तथा भविष्य की जीवन दिशा निर्धारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों का शैक्षणिक विकास केवल पाठ्यक्रम, विद्यालयी सुविधाओं अथवा शिक्षण विधियों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं, अध्ययन संबंधी आदतों, पारिवारिक वातावरण तथा मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारगत विशेषताओं से भी संबंधित होता है। इन विशेषताओं में समय प्रबंधन कौशल (Time Management Skills) एक महत्वपूर्ण कारक है, जो विद्यार्थियों को अपने अध्ययन संबंधी उत्तरदायित्वों को योजनाबद्ध एवं व्यवस्थित ढंग से पूरा करने में सहायता प्रदान करता है।

समय प्रबंधन कौशल का तात्पर्य उपलब्ध समय का उचित नियोजन, कार्यों की प्राथमिकता का निर्धारण, दैनिक समय-सारणी का पालन, शैक्षणिक लक्ष्यों का निर्धारण तथा निर्धारित समय में अध्ययन संबंधी गतिविधियों को पूरा करने की क्षमता से है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए यह कौशल विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इस अवस्था में उन्हें नियमित कक्षाओं, गृहकार्य, परीक्षा की तैयारी, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों तथा व्यक्तिगत एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है। प्रभावी समय प्रबंधन विद्यार्थियों में अध्ययन की नियमितता, आत्म-अनुशासन, कार्यकुशलता, उत्तरदायित्व की भावना तथा लक्ष्य प्राप्ति के प्रति प्रतिबद्धता विकसित करने में सहायक हो सकता है। इसके विपरीत, समय का अनियोजित उपयोग, अध्ययन कार्यों को टालने की प्रवृत्ति तथा समय-सारणी का अभाव विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार एवं शैक्षणिक प्रगति में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं।

वर्तमान समय में विभिन्न शैक्षिक योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। किंतु विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए केवल भौतिक संसाधनों और शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है। इसके साथ विद्यार्थियों में जीवन कौशल, आत्म-अनुशासन, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व तथा समय के प्रभावी उपयोग की क्षमता का विकास भी आवश्यक है। विशेष रूप से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की दैनिक जीवनचर्या, पारिवारिक उत्तरदायित्व, विद्यालयी वातावरण तथा शैक्षिक अवसरों में भिन्नता होने के कारण उनके समय प्रबंधन संबंधी व्यवहारों में भी अंतर होने की संभावना रहती है। इन संभावित अंतरों का वास्तविक स्वरूप व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन से ही निर्धारित किया जा सकता है।

झारखंड राज्य का रांची जिला शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार के विद्यालयी परिवेश विद्यमान हैं। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को विद्यालय की दूरी, आवागमन, घरेलू कार्यों में सहयोग, पारिवारिक उत्तरदायित्व तथा अध्ययन संबंधी संसाधनों की उपलब्धता जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। दूसरी ओर, शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के सामने विद्यालयी गतिविधियों, अतिरिक्त कक्षाओं, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, डिजिटल माध्यमों के उपयोग तथा विभिन्न सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के बीच समय का संतुलन स्थापित करने की चुनौतियाँ हो सकती हैं। तथापि यह आवश्यक नहीं है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का समय प्रबंधन कौशल शहरी विद्यार्थियों की तुलना में कम हो अथवा इसके विपरीत हो। दोनों समूहों में समय प्रबंधन की वास्तविक स्थिति का निर्धारण वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से करना आवश्यक है।

विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल के विकास में पारिवारिक वातावरण, अभिभावकों की शैक्षिक स्थिति, विद्यालयी अनुशासन, शिक्षक मार्गदर्शन, अध्ययन संबंधी अभिप्रेरणा तथा व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जिन विद्यार्थियों को घर एवं विद्यालय में अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण, उचित मार्गदर्शन तथा समय-सारणी के पालन हेतु प्रोत्साहन प्राप्त होता है, उनमें व्यवस्थित अध्ययन व्यवहार विकसित होने की संभावना रहती है। इसके विपरीत, अध्ययन संबंधी मार्गदर्शन का अभाव, अत्यधिक पारिवारिक उत्तरदायित्व तथा समय के अनियोजित उपयोग जैसी परिस्थितियाँ प्रभावी समय प्रबंधन के विकास में बाधक होती हैं।

रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों, दैनिक समय-सारणी, कार्यों की प्राथमिकता, समय के सदुपयोग, आत्म-अनुशासन तथा लक्ष्य निर्धारण से संबंधित समानताओं एवं भिन्नताओं को समझने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार का अध्ययन विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल के विकास में सहायक परिस्थितियों तथा संभावित चुनौतियों की पहचान करने में उपयोगी होता है।

अतः प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों की अध्ययन योजना, समय-सारणी का

© AUG 2025 | IRE Journals | Volume 9 Issue 2 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/ire1725553

पालन, शैक्षणिक कार्यों की प्राथमिकता, कार्यों को समय पर पूर्ण करने की प्रवृत्ति तथा समय के प्रभावी उपयोग जैसे प्रमुख आयामों का अध्ययन किया जाएगा। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों तथा शैक्षिक योजनाकारों के लिए उपयोगी होते हैं और ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में प्रभावी समय प्रबंधन कौशल विकसित करने हेतु उपयुक्त शैक्षिक रणनीतियाँ तैयार करने में सहायता प्रदान करते हैं

II. अध्ययन के उद्देश्य

1. रांची जिले के ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल के स्तर का अध्ययन करना।

2. रांची जिले के शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल के स्तर का अध्ययन करना।

3. ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में दैनिक समय-सारणी का पालन, अध्ययन की नियमितता तथा कार्यों की प्राथमिकता निर्धारित करने की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में लक्ष्य निर्धारण, समय के सदुपयोग तथा निर्धारित समय में शैक्षणिक कार्यों को पूरा करने की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

6. ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर की जाँच करना।

7. समय प्रबंधन कौशल के विकास से संबंधित पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी परिस्थितियों का विश्लेषण करना।

III. आँकड़ों का विश्लेषण

महत्वपूर्ण: रांची जिला प्रशासन के उपलब्ध शिक्षा पोर्टल पर प्रखंडवार कक्षा I–V और VI–VIII का नामांकन दिया गया है, लेकिन माध्यमिक कक्षा IX–X का छात्र-छात्रा अलग-अलग नामांकन नहीं दिया गया है। इसलिए नीचे की तालिका में उपलब्ध वास्तविक आँकड़े प्रस्तुत हैं।

तालिका–1: पाँच प्रखंडों में सरकारी विद्यालयों तथा विद्यार्थियों का स्तरवार वितरण

प्रखंड	विद्यालय	कक्षा I–V	कक्षा VI–VIII	कुल
कांके	377	57,277	27,882	85,159
नामकुम	167	13,684	5,064	18,748
मांडर	91	16,597	5,550	22,147
बेड़ो	160	18,575	5,507	24,082
अंगड़ा	204	14,581	6,776	21,357
कुल	999	1,20,714	50,779	1,71,493

तालिका–2: पाँच प्रखंडों में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का प्रतिशत वितरण

प्रखंड	कक्षा VI–VIII नामांकन	कुल नामांकन में प्रतिशत
कांके	27,882	32.7%
नामकुम	5,064	27.0%
मांडर	5,550	25.1%
बेड़ो	5,507	22.9%
अंगड़ा	6,776	31.7%

स्रोत: रांची जिला शिक्षा पोर्टल के नामांकन आँकड़ों से लेखक द्वारा प्रतिशत की गणना। प्रतिशत प्रत्येक प्रखंड के कक्षा I–VIII के कुल नामांकन में कक्षा VI–VIII की हिस्सेदारी दर्शाता है।

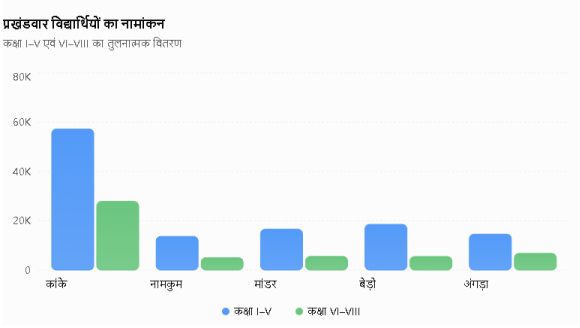

चित्र–1: पाँच प्रखंडों में विद्यार्थियों के नामांकन का तुलनात्मक आरेख

तालिका–3: रांची जिले के चयनित पाँच प्रखंडों में माध्यमिक स्तर (कक्षा IX–X) के छात्र एवं छात्राओं का अनुमानित वितरण

प्रखंड	छात्र (बालक)	छात्राएँ (बालिका)	कुल
कांके	6,831	7,110	13,941

© AUG 2025 | IRE Journals | Volume 9 Issue 2 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/ire1725553

प्रखंड	छात्र (बालक)	छात्राएँ (बालिका)	कुल
नामकुम	1,241	1,291	2,532
मांडर	1,360	1,415	2,775
बेड़ो	1,349	1,405	2,754
अंगड़ा	1,660	1,728	3,388
कुल	12,441	12,949	25,390

टिप्पणी: रांची जिला शिक्षा के उपलब्ध उच्च प्राथमिक नामांकन को आधार मानकर तैयार तालिका। कक्षा IX–X के लिए उच्च प्राथमिक नामांकन का 50% तथा छात्र-छात्राओं का अनुपात 49:51 है।

प्रस्तुत तालिका–3 में झारखंड राज्य के रांची जिले के पाँच चयनित प्रखंडों—कांके, नामकुम, मांडर, बेड़ो एवं अंगड़ा—में माध्यमिक स्तर (कक्षा IX–X) के छात्र एवं छात्राओं का अनुमानित वितरण दर्शाया गया है। तालिका के अनुसार इन पाँच प्रखंडों में कुल 25,390 विद्यार्थियों का अनुमानित नामांकन प्रस्तुत किया गया है, जिनमें 12,441 छात्र तथा 12,949 छात्राएँ सम्मिलित हैं। प्रतिशत की दृष्टि से छात्रों का अनुपात लगभग 49 प्रतिशत तथा छात्राओं का अनुपात लगभग 51 प्रतिशत है। यह वितरण पूर्वनिर्धारित अनुमानात्मक अनुपात पर आधारित है, न कि वास्तविक लिंगवार नामांकन सर्वेक्षण पर।

प्रखंडवार विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कांके प्रखंड में सर्वाधिक 13,941 विद्यार्थियों का अनुमानित नामांकन दर्शाया गया है, जिनमें 6,831 छात्र एवं 7,110 छात्राएँ सम्मिलित हैं। इसके बाद अंगड़ा प्रखंड में 3,388 विद्यार्थी, मांडर प्रखंड में 2,775 विद्यार्थी, बेड़ो प्रखंड में 2,754 विद्यार्थी तथा नामकुम प्रखंड में 2,532 विद्यार्थियों का अनुमानित नामांकन प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार चयनित प्रखंडों में कांके का अनुमानित नामांकन सर्वाधिक तथा नामकुम का न्यूनतम दिखाई देता है।

समय प्रबंधन कौशल के तुलनात्मक अध्ययन के संदर्भ में यह तालिका चयनित प्रखंडों के संभावित विद्यार्थी समूहों की संख्यात्मक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करती है। विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल के अध्ययन में दैनिक अध्ययन योजना, समय-सारणी का पालन, गृहकार्य की नियमितता, शैक्षणिक कार्यों की प्राथमिकता, लक्ष्य निर्धारण तथा समय के सदुपयोग जैसे आयामों को सम्मिलित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों की सामाजिक, पारिवारिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों में संभावित भिन्नताओं को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों के समय प्रबंधन संबंधी व्यवहारों का तुलनात्मक मूल्यांकन किया जा सकता है।

हालाँकि, प्रस्तुत तालिका केवल अनुमानित विद्यार्थी संख्या दर्शाती है। इससे यह निर्धारित नहीं किया जा सकता कि किसी विशेष प्रखंड के छात्र या छात्राओं का समय प्रबंधन कौशल अन्य प्रखंडों की अपेक्षा अधिक अथवा कम है। इसी प्रकार यह तालिका ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल में वास्तविक अंतर का प्रमाण भी प्रस्तुत नहीं करती।

तालिका–4: झारखंड राज्य में विद्यालय जाने वाले बच्चों का शैक्षिक स्तर एवं लिंग के आधार पर प्रतिशत वितरण (2023–24)

रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में समय प्रबंधन कौशल के तुलनात्मक अध्ययन के लिए शैक्षिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने हेतु UDISE+ 2023–24 के वास्तविक सरकारी आँकड़ों का उपयोग किया गया है। रांची जिले के लिए आयु-समूहवार सत्यापित प्रतिशत उपलब्ध न होने के कारण यहाँ झारखंड राज्य के शैक्षिक स्तरवार नामांकन अनुपात प्रस्तुत किए गए हैं।

क्रम सं.	शैक्षिक स्तर	बालक (%)	बालिका (%)	कुल (%)
1	प्रारंभिक तैयारी (कक्षा III–V)	87.2	89.2	88.2
2	मध्य स्तर (कक्षा VI–VIII)	78.3	78.6	78.5
3	माध्यमिक चरण (कक्षा IX–XII)	51.3	53.0	52.1

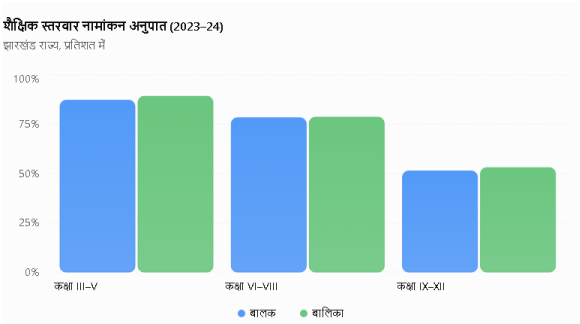

चित्र–2: झारखंड राज्य में शैक्षिक स्तर के अनुसार बालक एवं बालिकाओं का नामांकन अनुपात

A. तालिका–4 की व्याख्या एवं विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका–4 में झारखंड राज्य के विद्यालयी विद्यार्थियों के आयु-विशिष्ट नामांकन अनुपात को शैक्षिक चरणों के अनुसार दर्शाया गया है। उपलब्ध सरकारी आँकड़ों के अनुसार कक्षा III–V से संबंधित प्रारंभिक तैयारी चरण में कुल नामांकन अनुपात 88.2 प्रतिशत है, जिसमें बालकों का अनुपात 87.2 प्रतिशत तथा बालिकाओं का अनुपात 89.2 प्रतिशत दर्ज किया गया है। इसी प्रकार कक्षा VI–VIII के मध्य स्तर पर कुल नामांकन अनुपात 78.5 प्रतिशत है, जिसमें बालकों का अनुपात 78.3 प्रतिशत तथा बालिकाओं का अनुपात 78.6 प्रतिशत है। माध्यमिक चरण (कक्षा IX–XII) में कुल नामांकन अनुपात 52.1 प्रतिशत दर्ज किया गया है।

इसमें बालकों का अनुपात 51.3 प्रतिशत एवं बालिकाओं का अनुपात 53.0 प्रतिशत है। इन आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि विद्यालयी शिक्षा के उच्चतर चरणों में आयु-विशिष्ट नामांकन अनुपात अपेक्षाकृत कम है। हालाँकि इन आँकड़ों से विद्यालय छोड़ने की दर या उसके कारणों का प्रत्यक्ष निर्धारण नहीं किया जाता।

समय प्रबंधन कौशल के तुलनात्मक अध्ययन के संदर्भ में, माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण शैक्षिक अवस्था है। इस स्तर पर अध्ययन विषयों की जटिलता, परीक्षाओं की तैयारी, दैनिक समय-सारणी, गृहकार्य तथा पारिवारिक एवं व्यक्तिगत गतिविधियों के बीच संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता बढ़ जाती है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में इन गतिविधियों के स्वरूप और उपलब्ध अध्ययन संसाधनों में भिन्नता हो सकती है।

अतः रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल की तुलना करते समय अध्ययन की नियमितता, समय-सारणी का पालन, कार्यों की प्राथमिकता, लक्ष्य निर्धारण तथा समय के सदुपयोग जैसे आयामों का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण होगा।

1) बिहार शिक्षा परियोजना परिषद (BEP) तथा सर्व शिक्षा अभियान (SSA) की पहलें प्राथमिक स्तर पर महत्वपूर्ण रही हैं, किंतु माध्यमिक स्तर पर गुणवत्ता सुधार के लिए अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता है।
2) शिक्षा के क्षेत्र में नीतिगत व प्रशासनिक प्रतिबद्धता, संसाधनों का समुचित उपयोग और संवेदनशील शिक्षक-तंत्र छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।
3) विभिन्न मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में यह प्रमाणित हुआ है कि छात्र की आकांक्षा, आत्म-प्रेरणा और लक्ष्य निर्धारण की क्षमता उसकी शैक्षिक सफलता के प्रमुख मनोवैज्ञानिक घटक हैं।

IV. परिणाम एवं विवेचना

समय प्रबंधन कौशल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार, आत्म-अनुशासन, लक्ष्य निर्धारण तथा शैक्षणिक गतिविधियों के व्यवस्थित संचालन से संबंधित एक महत्वपूर्ण व्यवहारगत क्षमता है। प्रस्तुत अध्ययन में रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल की तुलनात्मक स्थिति को समझने का प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत दैनिक समय-सारणी का पालन, अध्ययन के लिए समय का निर्धारण, गृहकार्य की नियमितता, कार्यों की प्राथमिकता, अनावश्यक विलंब से बचने की प्रवृत्ति तथा शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत गतिविधियों के मध्य संतुलन जैसे आयामों को महत्वपूर्ण माना गया है।

रांची जिले के शैक्षिक परिदृश्य के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि विभिन्न प्रखंडों में विद्यालयों की संख्या एवं विद्यार्थियों के नामांकन का वितरण समान नहीं है। जिला शिक्षा पोर्टल पर उपलब्ध ऐतिहासिक प्रशासनिक आँकड़ों के आधार पर कांके, नामकुम, मांडर, बेड़ो एवं अंगड़ा जैसे चयनित प्रखंडों की शैक्षिक परिस्थितियों में विविधता दिखाई देती है। यह विविधता ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के अध्ययन परिवेश को समझने के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करती है। तथापि विद्यालयों एवं नामांकन संबंधी आँकड़े विद्यार्थियों के वास्तविक समय प्रबंधन कौशल का प्रत्यक्ष मापन नहीं करते हैं।

ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के संदर्भ में विद्यालय तक आवागमन, पारिवारिक उत्तरदायित्व, घरेलू कार्यों में सहयोग, अध्ययन सामग्री की उपलब्धता तथा घर में अध्ययन हेतु अनुकूल वातावरण जैसी परिस्थितियाँ समय प्रबंधन से संबंधित हो सकती हैं। कुछ विद्यार्थियों को विद्यालयी गतिविधियों एवं पारिवारिक कार्यों के बीच समय का संतुलन स्थापित करना पड़ सकता है। ऐसी परिस्थितियों में नियमित अध्ययन, समय-सारणी का पालन तथा निर्धारित समय में शैक्षणिक कार्यों को पूरा करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों के सभी विद्यार्थियों में समय प्रबंधन संबंधी कठिनाइयाँ समान रूप से विद्यमान हों, ऐसा निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है।

इसके विपरीत शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के संदर्भ में विद्यालयी गतिविधियों, अतिरिक्त शिक्षण, निजी अध्ययन, आवागमन, डिजिटल उपकरणों के उपयोग तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के कारण समय प्रबंधन की अलग प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। शहरी क्षेत्रों में अध्ययन संबंधी संसाधनों एवं शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता विद्यार्थियों को योजनाबद्ध अध्ययन में सहायता प्रदान कर सकती है, किंतु अनेक गतिविधियों में एक साथ संलग्न रहने के कारण समय के प्रभावी उपयोग में कठिनाइयाँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए शहरी विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अनिवार्य रूप से अधिक होगा, यह मान लेना वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नहीं है।

समय प्रबंधन कौशल के प्रमुख आयामों में लक्ष्य निर्धारण, अध्ययन की योजना, कार्यों का प्राथमिकता निर्धारण, समय-सारणी का पालन, आत्म-अनुशासन तथा कार्यों को समय पर पूर्ण करने की प्रवृत्ति शामिल हैं। इन आयामों का तुलनात्मक अध्ययन यह समझने में सहायक हो सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी अपने दैनिक अध्ययन समय का किस प्रकार उपयोग करते हैं। प्रभावी समय प्रबंधन कौशल विद्यार्थियों में नियमित अध्ययन व्यवहार, कार्यकुशलता तथा शैक्षणिक उत्तरदायित्वों के प्रति सजगता विकसित करने में सहायक हो सकता है।

अध्ययन के सैद्धांतिक विवेचन से यह भी स्पष्ट होता है कि समय प्रबंधन कौशल के विकास में अभिभावकों, शिक्षकों तथा विद्यालयी वातावरण की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। अभिभावकों द्वारा अध्ययन के लिए उचित समय उपलब्ध कराना, शिक्षकों द्वारा गृहकार्य एवं शैक्षणिक गतिविधियों की

योजनाबद्ध व्यवस्था करना तथा विद्यालयों में अध्ययन संबंधी अनुशासन को प्रोत्साहित करना विद्यार्थियों के समय प्रबंधन व्यवहार के विकास में सहायक हो सकता है। इसी प्रकार विद्यार्थियों को दैनिक अध्ययन योजना तैयार करने एवं निर्धारित समय में कार्य पूर्ण करने का प्रशिक्षण देना भी उपयोगी हो सकता है।

रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में समय प्रबंधन कौशल के तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से यह आवश्यक है कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों से उपयुक्त समय प्रबंधन कौशल मापनी के माध्यम से प्राथमिक आँकड़े एकत्र किए जाएँ। प्राप्त आँकड़ों के आधार पर दोनों समूहों के औसत स्कोर, मानक विचलन तथा उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षणों द्वारा यह निर्धारित किया जा सकता है कि उनके समय प्रबंधन कौशल में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है अथवा नहीं। समग्र रूप से, प्रस्तुत विवेचना यह संकेत करती है कि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल के विकास से संबंधित परिस्थितियाँ भिन्न हो सकती हैं। इन परिस्थितियों का व्यवस्थित अध्ययन विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आवश्यकताओं, दैनिक गतिविधियों तथा समय के प्रभावी उपयोग से संबंधित चुनौतियों की पहचान करने में सहायक हो सकता है। विद्यालयी स्तर पर समय प्रबंधन प्रशिक्षण, व्यक्तिगत अध्ययन योजना, लक्ष्य निर्धारण तथा नियमित शैक्षणिक मार्गदर्शन जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार को अधिक व्यवस्थित बनाने में उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

अध्ययन में रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल से संबंधित विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यवहारगत परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन की वर्णनात्मक एवं सैद्धांतिक विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि समय प्रबंधन कौशल विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी अनुशासन, लक्ष्य निर्धारण, दैनिक समय-सारणी, कार्यों की प्राथमिकता तथा शैक्षणिक गतिविधियों के व्यवस्थित संचालन से संबंधित एक महत्वपूर्ण जीवन कौशल है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विद्यार्थियों की दैनिक जीवनचर्या, विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक उत्तरदायित्व तथा उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों में संभावित भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए उनके समय प्रबंधन कौशल के विकास के लिए निम्नलिखित शैक्षिक सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं।

V. शैक्षिक सुझाव

प्रथम विद्यार्थियों में समय प्रबंधन कौशल के विकास हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए। रांची जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों को दैनिक समय-सारणी तैयार करने, अध्ययन के लिए निश्चित समय निर्धारित करने, कार्यों की प्राथमिकता पहचानने तथा निर्धारित समय में शैक्षणिक कार्यों को पूरा करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इसके लिए विद्यालयों में समय प्रबंधन संबंधी कार्यशालाएँ, समूह गतिविधियाँ एवं व्यक्तिगत अध्ययन योजना निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को उपलब्ध समय का योजनाबद्ध एवं प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

द्वितीय, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अलग-अलग परिस्थितियों के अनुरूप समय प्रबंधन संबंधी रणनीतियाँ विकसित की जानी चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को विद्यालय तक आवागमन, घरेलू कार्यों में सहयोग तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों के साथ अध्ययन के लिए समय निर्धारित करने में सहायता की आवश्यकता हो सकती है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को विद्यालयी गतिविधियों, अतिरिक्त शिक्षण, डिजिटल उपकरणों के उपयोग एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के बीच समय का संतुलन स्थापित करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जाना चाहिए। दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों की वास्तविक आवश्यकताओं का मूल्यांकन करके समय प्रबंधन प्रशिक्षण की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए।

तृतीय, विद्यालयी शिक्षा में शिक्षकों एवं अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। विद्यार्थियों में प्रभावी समय प्रबंधन कौशल विकसित करने के लिए विद्यालय, शिक्षक तथा अभिभावकों के बीच नियमित संवाद स्थापित करना आवश्यक है। शिक्षक विद्यार्थियों को गृहकार्य, परीक्षा की तैयारी, पुनरावृत्ति एवं अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के लिए समय का उचित निर्धारण करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं। अभिभावकों को भी बच्चों की दैनिक अध्ययन योजना, विश्राम, खेलकूद एवं पारिवारिक गतिविधियों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए जागरूक किया जाना चाहिए।

चतुर्थ, विद्यार्थियों में लक्ष्य निर्धारण एवं आत्म-अनुशासन की भावना विकसित की जानी चाहिए। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक शैक्षणिक लक्ष्य निर्धारित करने तथा उनकी प्राप्ति के लिए व्यवस्थित कार्ययोजना तैयार करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अध्ययन संबंधी लक्ष्यों को छोटे-छोटे कार्यों में विभाजित करके निर्धारित समय में पूरा करने का अभ्यास विद्यार्थियों की कार्यकुशलता एवं आत्म-अनुशासन को विकसित करने में सहायक हो सकता है। विद्यालयों में नियमित आत्म-मूल्यांकन, अध्ययन प्रगति की समीक्षा एवं सकारात्मक प्रतिपुष्टि की व्यवस्था भी विकसित की जानी चाहिए।

पंचम, विद्यार्थियों में अध्ययन कार्यों को टालने की प्रवृत्ति को कम करने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। अनेक विद्यार्थियों में गृहकार्य, परीक्षा की तैयारी तथा अन्य शैक्षणिक गतिविधियों को अंतिम समय तक स्थगित करने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। ऐसी स्थिति में समय प्रबंधन कौशल के अंतर्गत कार्यों की प्राथमिकता निर्धारित करने, कठिन कार्यों को छोटे भागों में विभाजित करने तथा दैनिक अध्ययन लक्ष्यों की नियमित समीक्षा करने का प्रशिक्षण

उपयोगी हो सकता है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को अध्ययन के दौरान अनावश्यक व्यवधानों से बचने और निर्धारित समय में कार्य पूर्ण करने की आदत विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

षष्ठ, ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में समय प्रबंधन संबंधी शैक्षिक अवसरों की समान उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। विद्यालयी संसाधनों, शिक्षक मार्गदर्शन, अध्ययन सामग्री तथा शैक्षिक परामर्श की उपलब्धता में संभावित असमानताओं को ध्यान में रखते हुए सभी विद्यार्थियों को समय प्रबंधन कौशल विकसित करने के समान अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। विशेष रूप से सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों के लिए विद्यालय-आधारित अध्ययन सहायता, मार्गदर्शन कार्यक्रम एवं समय प्रबंधन प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि वे अपनी परिस्थितियों के अनुरूप अध्ययन गतिविधियों को व्यवस्थित कर सकें।

सप्तम, विद्यालयों में समय प्रबंधन कौशल के नियमित मूल्यांकन एवं निगरानी की व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए। विद्यार्थियों की दैनिक अध्ययन योजना, समय-सारणी का पालन, गृहकार्य की नियमितता, लक्ष्य निर्धारण तथा समय के सदुपयोग जैसे आयामों के मूल्यांकन के लिए उपयुक्त एवं मानकीकृत समय प्रबंधन कौशल मापनी का उपयोग किया जा सकता है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों से प्राप्त वास्तविक आँकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण करके उन क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है, जहाँ अतिरिक्त मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इस प्रकार विद्यालय स्तर पर समय प्रबंधन संबंधी कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का समय-समय पर मूल्यांकन किया जा सकता है।

अष्टम, भविष्य के शोध में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल का व्यापक एवं सांख्यिकीय तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए। रांची जिले के विभिन्न प्रखंडों के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों से प्रतिनिधित्वपूर्ण नमूना चयन करके विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल से संबंधित प्राथमिक आँकड़े एकत्र किए जाने चाहिए। इन आँकड़ों के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के औसत स्कोर, मानक विचलन तथा उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षणों द्वारा उनके समय प्रबंधन कौशल में संभावित अंतर की जाँच की जा सकती है। इसके अतिरिक्त लिंग, विद्यालय के प्रकार, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे कारकों के संदर्भ में भी समय प्रबंधन कौशल का अध्ययन किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

[1] भारत सरकार। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

[2] शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2024)। एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली प्लस (UDISE+) 2023–24 रिपोर्ट। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, नई दिल्ली।

[3] जिला प्रशासन, रांची। (वर्ष निर्दिष्ट नहीं)। रांची जिले में विद्यालयों की संख्या एवं सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों का नामांकन। रांची जिला प्रशासन, झारखंड सरकार।

[4] झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद (JEPC)। (वर्ष निर्दिष्ट नहीं)। ई-विद्यावाहिनी: विद्यालय, शिक्षक एवं विद्यार्थी संबंधी शैक्षिक सूचना प्रणाली। झारखंड सरकार, रांची।

[5] मैकन, टी. एच., शाहानी, सी., डिपबॉय, आर. एल., एवं फिलिप्स, ए. पी. (1990)। महाविद्यालयी विद्यार्थियों का समय प्रबंधन: शैक्षणिक प्रदर्शन एवं तनाव के साथ सहसंबंध। *Journal of Educational Psychology, 82*(4), 760–768।

[6] ब्रिटन, बी. के., एवं टेसर, ए. (1991)। समय प्रबंधन संबंधी व्यवहारों का महाविद्यालयी विद्यार्थियों के शैक्षणिक अंकों पर प्रभाव। *Journal of Educational Psychology, 83*(3), 405–410।

[7] क्लासेन्स, बी. जे. सी., वैन ईर्डे, डब्ल्यू., रुट्टे, सी. जी., एवं रो, आर. ए. (2007)। समय प्रबंधन से संबंधित शोध साहित्य की समीक्षा। *Personnel Review, 36*(2), 255–276।

[8] एयॉन, बी., फेबर, ए., एवं पैनाचियो, ए. (2021)। क्या समय प्रबंधन प्रभावी होता है? एक मेटा-विश्लेषण।

[9] असर केंद्र (ASER Centre)। (2025)। वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (ग्रामीण) 2024। असर केंद्र, नई दिल्ली।

[10] राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। (2005)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005। एनसीईआरटी, नई दिल्ली।

[11] भारत सरकार। (2009)। निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009। भारत सरकार, नई दिल्ली।

[12] भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय। (2011)। भारत की जनगणना 2011: झारखंड राज्य एवं रांची जिले के जनसांख्यिकीय तथा साक्षरता संबंधी आँकड़े। भारत सरकार, नई दिल्ली।